ISSN : 2348-7143
June 2020
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
*Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 214 (C) : हिंदी साहित्य में चित्रित हाशिए का समाज*

# शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य में दलित चेतना

**प्रा. डॉ. विष्णु जी. राठोड**
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प,
तह. मालेगांव, जिला नासिक.

समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में शैलेश मटियानी का एक महत्वपूर्ण नाम है। इनके करीब-करीब ३० कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए है। इनकी कहानियों को उनके पुत्र राकेश मटियानी ने पाँच खंडों में प्रकाशित किया हैं, जिसमें २५० कहानियाँ संग्रहीत है। इनके कहानी साहित्य में भारतीय समाज के दबे, कुचले, शोषित, उपेक्षित और हाशिए के निम्नवर्गीय जीवन संदर्भों का सर्वाधिक चित्रण हुआ है। शैलश मटियानी की कहानियों में चित्रित निम्न वर्ग कुमाऊँ के अंचल से लेकर छोटे बडे नगरों एवं महानगरों से संबंध है, किंतु इनकी कहानियों में चित्रित उपेक्षित, पीडित, शोषित और दबा-कुचला वर्ग चाहे जिस क्षेत्र, वर्ग, सम्प्रदाय से संबंध है अपने असली रुप में दिखाई देता है। इसका कारण मटियानी जी का अत्यंत संवेदनशील, उस अंतर्दृष्टि को माना जा सकता है जिसने उन्हें भोगी एवं देखी चीजों को यथार्थ रुप में पकड पाने की अद्‌भुत क्षमता है।

शैलेश मटियानी ने दलित जीववन संदर्भो पर पर्याप्त कहानियाँ लिखी हैं उन कहानियों में, 'अहिंसा', 'जुलूस', 'हारा हुआ', संगीत भरी संध्या, माँ तुम आओ, अलाप, लाटी, भँवरे की जात, आंधी से आंधी तक, परिवर्तन, आक्रोश, भय, आवरण, दो दुखों का एक सुख, चुनाव, प्रेममुक्ति, चिट्ठी के चार अक्षर, वृत्ति, सतजुगिया, गोपुली गफूरन, गृहस्थी, प्यास आदि कहानियाँ प्रमुख रुप से देखी जाती हैं। इन कहानियों में दलितवर्ग प्रमुख रुप से तीन रुपों में चित्रित हुआ हैं। पहला वह जो भारतीय समाज की आमानवीयता से लाचार होकर समझौता करता दिखाई देता है। दूसरा वह जो अपनी मान-मर्यादा एवं हितों के लिए समाज व्यवस्था से सीधे टकराता है और तीसरा वह जो समाज व्यवस्था के प्रति आक्रोश को व्यक्त करता है किंतु उसका आक्रोश इतना दबा हुआ है कि अंतत: टूटकर समझौते की व्यवस्था को झेलता है। अत: कहने में संकोच नहीं है कि शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य में चित्रित दलित सरोकार अपने यथार्थ रुप में व्यक्त हुवा हैं जिसमें समकालीन भारतीय समाज में आए बदलाव के स्पष्ट स्वर मिला है।

'अहिंसा' कहानी का पात्र जगेश्वर दलित है। वह शासकिय व्यवस्था से सर्वाधिक त्रस्त है। आर्थिक तंगी के बावजूद वह अपनी पत्नी के इलाज के लिए पैसे इकठ्ठे करता है किंतु सरकारी अस्पतालों के कर्मचारी और डॉक्टरों की आमनवीयता और भ्रष्ट आचरण के कारण उनकी पत्नी ऑपरेशन के पूर्व दम तोडती है। यह देख कहानी का नायक जगेश्वर डॉक्टर की हत्य कर देता है। 'जुलूस' कहानी में भी चित्रित दलित चरित्र वर्तमान भारत की घिनौनी राजनीति से त्रस्त है। महालक्ष्मी के दिन बुधाराम को राजनीति के दबाव में आकर पुलिस उसे गिरफ्तार करती है।

'हरा हुआ' कहानी में भी गैरदलितों का दलितों के प्रति घृणा का चित्रण किया है। इस कहानी का पात्र दुखहरण मोची अत्यंत असहाय होते हुए भी गैरदलित गंडामल पहलवान द्वारा उसकी बेटी को छेडने पर जिस प्रकार का कथन करता है उससे उसकी दलित चेतना व्यक्त होती है, ''कह देना अपने बाप गंडामल पहलवान से, आगे से मेरे घर की तरफ मुँह किया तो उसकी बेहया आँखों को कटत्री से खींचकर बाहर निकाल दूँगा और जबान में ठोक दुँगा जूते की नाल।''(१) प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने विवश और लाचार दलित के द्वारा दी गई चुनौती से गैरदलित के टूटते मनोबल को दर्शाकर महान आदर्श के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी किया है। 'माँ तुम आओ' कहानी में गैरदलितों की अमानवीयता और दलित के प्रति रोष व्यक्त हुआ है । कहानी में माधो काका दलित बच्चू और बडी माँ का शोषण करता है। बच्चू अपनी बडी माँ से कहता है, ''अच्छा बडी माँ एक बात बताओ माधो काका हरिजन का बच्चा कहते है, तो मुझो बहुत बुरा लगता है।''(२) 'अलाप' कहानी में डिगर राम के जवीन का आलाप का चित्रण हुआ है। उसके आर्थिक रुप से लाचारी का आलाप चित्रित हुआ है।

'लाटी' कहानी गैरदलितों द्वारा दलित नारी उत्तमा लाटी के प्रति घोर उपेक्षा का चित्रण हुआ है। अपने पति डिगरुवा की मृत्यु के बाद वह अत्यंत आहत होती है। इस पर सहानुभूति के बजाय संवेदनहीनता का परिचय देते हुए कहते है, ''अब सगमरमर की मुरत जैसी खामोस क्यों बैठी है, ससुरी ! बोल? अरे रांड! कुछ तो बोल कि अपने खसम के मरने परंतू क्यों ढाई मील तक मुर्दे के पीछे चुडैल जैसी चली आयी।''(३) वस्तुत: लाटी कहानी में दलित स्त्री के प्रति ऐसा कथन भारतीय समाज की संवेदन शून्यता को व्यक्त करता है। 'परिवर्तन' इस कहानी में 'देवराम और जसुकी' दलित पात्र है। ये दोनों गैरदलितों द्वारा अमानवियता का शीकार हुए है। इस कहानी में दलितों द्वारा अपने उपर हो रही अन्याय और अत्याचारों से छूटकारा पाने का प्रयास दिखाई देता है। कहानी का नायक देवराम अपनी बिरादारी को सामाजिक उत्थान के लिए चिंताशील दिखाई देता है, ''वर्षो से ठाकुरों औ ब्राह्मणों की तुलना में बहुत कठोर परिश्रम करने पर भी उसकी जाती, बिरादारी के लोग न तो आर्थिक सुविधाएँ पाते हैं और न सामाजिक क्षेत्र में उन्हें आदर मिल पाता है।''(४) कुलमिलाकर यह कहानी दलित चेतना की वाहक है जिसमें समकालीन भारतीय समाज में व्यक्ति स्वतंत्रता की अनुगूँज है जो शैलेश के समकालीन बोध को प्रदर्शित करती है। 'भँवरे की जात' कहानी में कुँमाऊ अंचल की नाच-गाकर आजीविका चलानेवाली मिरासी दलित जाति से संबद्ध नारी जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है । इस कहानी में चित्रित नारी आर्थिक कठिनाईयों से जुझ रही है। कहानी की पात्र कं तुली स्वयं